विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ , लखीसराय

विषय- हिंदी ***दिनांक-26/05/2020***
वर्ग-पंचम ***वर्ग-शिक्षिका— नीतू कुमारी***

पाठ-2 (दादी माँ का पत्र)

सुप्रभात बच्चों,
आज की कक्षा में शेष भाग का अध्ययन करना है। जो इस प्रकार है:—

वे कहने लगे, "विद्या अभ्यास से बढ़ती है। धन उपयोग से घटता है। ज्ञान और सीख प्रयोग से बढ़ते हैं या बाँटने से भी बढ़ते हैं। तुम किसी को सौ रुपये देती हो तो लाभ पाने वाले को होता है। पर तुम सो रुपया खो देती हो, तो ये सौ रूपये किसी एक व्यक्ति के पास होगा और यदि किसी को ज्ञान देती हो तो वह ज्ञान तुम दोनों की संपत्ति होती है। यहाँ देने वाला कुछ खो नहीं देता। याद रखो ज्ञान चुराया नहीं जा सकता है। न तो इसे जंग लगता है ,न ही उपयोग नहीं होने पर यह नष्ट होता है।"
पिताजी कि इन ज्ञान भरी बातों से मानो मुझे जीवन का मूलमंत्र प्राप्त हो गया हो। वे मुझे इससे मूल्यवान कुछ नहीं दे सकते थे। मैं ये अब यही मन्त्र तुमको दे रही हूँ बेटी। शिक्षा एक अनवरत प्रक्रिया है जिससे जीवन पर्यंत चलती है। जीवन कर है और किताब की लेखिका तुम्हीं हो।
गाँधी जी कहा करते थे, "स्त्रियों का शिक्षित होना चाहिए, क्योंकि पुरुष के शिक्षित होने का लाभ केवल उसको है। स्त्री शिक्षित हो जाए तो पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है।" गाँधी जी का एक और मंत्र था -" प्रत्येक व्यक्ति हर व्यक्ति को पढ़ाए पढ़ाने से उनका अर्थ सिर्फ़ पढ़ाने या लिखने से था। उनका अभिप्राय था कि जो शिक्षा से है। उनके सोच - विचार को व्यापक बनाया जाए। बेटी अपने ज्ञान को तुम दूसरों में बाँटो,विशेष कर उसमें जो पुस्तकों के अभाव में पढ़ लिख नहीं सकते। उन्हें शिक्षा से वंचित मत होने दो।
कठोर परिश्रम का फल सदा अच्छा होता है। जो भी काम शुरू करो उसे सही ढंग से अंत तक करती जाओ। परिश्रम कम लगे या अधिक काम मन लगाकर करना। तुम्हारा प्रत्येक प्रयास सफल हो यही मेरा आशीर्वाद है।

बच्चों आज इस पत्र का समापन हुआ। पत्र को पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें।

गृहकार्य :—

पंक्तियाँ मिलाकर वाक्य पूरा कीजिए:—-
(क) इससे पता चलता है कि तुम की वे मुखे गम्भीरता से नहीं सुनेंगे।
(ख) मैं कुछ रोमांचक और बाँटने से बढ़ते हैं।
(ग) रुको, पहले नौकरी तो हो जाए सदा अच्छा होता है।
(घ) मुझे इस बात की चिंता सताती थी गम्भीरतपिर्वक अद्ध्ययन कर रही हो।
(ङ) ज्ञान और सीख प्रयोग या चुनौतीपूर्ण कार्य करना चाहती थी।
(च) कठोर परिश्रम का फल तब ख़ुशी मनाना।